# अहीरवाल क्षेत्र के अहीरों का सैन्य सेवा में योगदान : एक विश्लेषण

डॉ रवीन्द्र सिंह यादव
व्याख्याता राजनीति विज्ञान

अहीरवाल क्षेत्र उत्तर- पश्चिम भारत का महत्वपूर्ण जनपद है। इस क्षेत्र के अंतर्गत हरियाणा राज्य के गुडगांव जिले का उत्तरी व पश्चिमी भाग, रेवाडी, महेन्द्रगढ पूरे जिले भिवानी जिले की भिवानी व दादरी तहसील, झज्जर जिले की झज्जर तहसील तथा राजस्थान प्रदेश के बहरोड, मुण्डावर, तिजारा, कोटकासिम, बानसूर (अलवर जिला), कोटपूतली (जयपुर जिला), खेतडी, सिंघाना (झुन्झुनू जिला) नीम का थाना, डाबला (सीकर जिला) क्षेत्र शामिल है। चूंकि इस जनपद में सबसे अधिक जनसंख्या अहीर जाति के लोगो की है। अत: इसी कारण इस क्षेत्र को अहीरवाल प्रदेश अर्थात अहीरों का प्रदेश कहते है। इस क्षेत्र की सांस्कृतिक राजधानी रेवाडी है।१

अहीर एक वैदिक क्षत्रिय जाति है। अहीर जाति की उत्पत्ति के विषय में दो मत प्रचलित है। धार्मिक मान्यताओं एवं हिन्दू धर्म ग्रन्थो के अनुसार यादव (अहीर) जाति का उद्भव पौराणिक राजा यदु से हुआ है। जबकि दूसरा मत भारतीय एवं पाश्चात्य साहित्य एवं पुरातात्विक अवशेषों के अनुसार प्राचीन आभीर वंश से अहीर जाति की उत्पत्ति हुई है। इतिहासविदों के अनुसार आभीर का अपभ्रंश अहीर है। आभीर का शाब्दिक अर्थ होता है - निर्भय या निडर। आभीरों का उल्लेख अनेक शिलालेखों में पाया जाता है तथा महाभारत व टॉलमी के यात्रा वृतान्त में भी इनका विवरण है। शक राजाओं की सेनाओं मे ये लोग सेनापति के पद पर नियुक्त थे।२ अर्थात प्रारंभ से ही अहीर एक लडाका जाति रही है। वर्ष १९२० में भारत में अंग्रेजो ने अहीर जाति को सैन्य वर्ण (मार्शल रेस) के रूप में सेना में भर्ती हेतु मान्यता प्रदान की थी। तथा अहीरों की चार कम्पनियां बनाई गई थी।

मुगलकाल में लडे गए युद्धो में भी अहीरवाल क्षेत्र के अहीरों की बडी भूमिका रही है। मुगल सेना में अहीरों की टुकडियां विद्यमान थी। काबुल विजय (१५८१) के दौरान राव रणमल नुणीवाल के नेतृत्व में अहीरों का एक दस्ता हरावल दस्ते में था तथा इन्होने बडी बहादुरी का परिचय दिया था। नादिरशाह के आक्रमण के समय करनाल युद्ध (१७३९) में राव बालकिशन यादव ने बडी ही बहादुरी से लडते हुए बलिदान दिया था।

१८५७ की क्रान्ति में तो अहीरवाल क्षेत्र के अहीर इसके जनक थे। दिल्ली में बहादुरशाह जफर के बादशाह घोषित होते ही रेवाडी रियासत के राव राजा तुलाराम ने भी स्वराज्य की घोषणा कर के रेवाडी तहसील और थाने पर अधिकार कर लिया तथा तहसील के खजाने से ८३६४ रूपये अपने कब्जे में ले लिए। इसके बाद इन्होने सभी सरकारी इमारतों पर कब्जा कर लिया और स्वयं को रेवाडी, भोंडा व शाहजहांपुर के परगनों का स्वतंत्र शासक घोषित कर दिया।३

क्रान्ति के दौरान दिल्ली में क्रान्तिकारियों की सर्वप्रथम सहायता भी अहीर सरदार राव राजा तुलाराम ने की थी। राव राजा ने ४५ हजार रूपये नकद

क्रान्ति कोष में बहादुर शाह जफर को भेजे थे। इसके अतिरिक्त सेना की आवश्यकता के लिए अन्य चीजे भी भेजी गई। अनाज की कमी होने पर राव राजा ने ४५ गाडी अनाज की भेजी, ४ हजार खाली बोरियां मोर्चबंदी के लिए तथा बारूद बनाने के लिए नमक की गाडियां भेजी गई। सैनिकों के लिये अफीम की खेप भी राव राजा द्वारा दिल्ली भेजी गई थी। ४ १६ नवम्बर १८५७ को नसीबपुर के मैदान में अंग्रेजो को राव तुलाराम के नेतृत्व में कडी टक्कर दी, लेकिन क्रान्ति की विफलता के बाद भी राव तुलाराम का संघर्ष सैन्य इतिहास में स्वर्णीम अक्षरों में दर्ज है।

प्रथम विश्व युद्ध में अहीरवाल क्षेत्र के अहीरों का शौर्य विश्वविख्यात है। एक रिपोर्ट के अनुसार लगभग २० हजार अहीरों ने इस महायुद्ध में भाग लिया था। ग्राम कोसली से ही २४७ लोगो ने इस महायुद्ध में भाग लिया था। जिसमें ६ शहीद हुए थे। जिसका पत्थर आज भी कोसली ग्राम में लगा हुआ है। कोसली ग्राम में सैन्य सेवा का लम्बा इतिहास है इसके लिए एक कहावत भी मशहूर है – "बावन बंगले कोसली रणबांके कई हजार, घर-घर सोहणे गाभरू घर घर में सरदार।'' इस महायुद्ध में अहीरवाल के अहीरों ने बहादुरी के कई पुरस्कार जीते। सुबेदार निहाल सिंह, ९८, रस्सल इन्फैन्ट्री रेजिमेंट का आई.डी.एस.एम. (द इण्डियन डिस्टिंग्सड सर्विस मैडल) से सम्मावित किया गया। यह अवार्ड महावीर चक्र के समान था। कप्तान शिवसहाय ने प्रथम व द्वितीय दोनों विश्वयुद्ध लडे थे इन्हे ब्रिटिश सरकार ने सरदार बहादुर व ओ.बी.आई. (आर्डर ऑफ ब्रिटिश इंडिया) अवार्ड से सम्मानित किया था। ५

सुबेदार मेजर छाजुराम को आई.ओ.एम. (इंडियन ऑर्डर ऑफ मेरिट) से सम्मानित किया गया। इन्होने तुर्की सेना के विरूद्ध अदम्य साहस का परिचय दिया था। सुबेदार बुधराम यादव भी इसी मोर्चे पर तैनात थे इन्हे भी आई. ओ. एम. से नवाजा गया था। जमादार भैरोसिंह यादव को फारस की खाडी मोर्चे पर अदम्य साहस के लिए आई.डी. एम. एस. से सम्मानित किया गया था। इस महायुद्ध में सुबेदार मेजर भवानी सिंह यादव ने तो साहस और वीरता के उच्च सौपान को प्राप्त किया। इन्होने काला सागर मोर्चे पर युद्ध में वीरता के लिये ण्क्ै से सम्मानित किया गया था तथा इसी दौरान इन्हे दो बार 'मेंशन इन डिस्पैच' से नवाजा गया। इस तरह प्रथम विश्व युद्ध में तीन बार वीरता पुरस्कार पाने वाले ये एक मात्र यौद्धा थे।

इसी तरह द्वितीय विश्व युद्ध मे भी अहीरों ने अपनी दिलेरी का जलवा बिखेरा और लगभग ४० हजार अहीरों ने इस महायुद्ध में भाग लिया। कप्तान उमराव सिंह यादव ने कलादान घाटी, बर्मा मे अदम्य साहस और शौर्य का प्रदर्शन किया इन्हे बहादुरी के सर्वोच्च सम्मान विक्टोरिया क्रॉस से सम्मानित किया गया था। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान ये रॉयल इण्डियन आर्टलरी के एक मात्र गैर कमीशन अधिकारी थे जो कि विक्टोरिया क्रॉस से नवाजे गए थे। इन सब के अतिरिक्त अफ्रीका स्टार, बर्मा स्टार, कोरोनेशन पदक, १९३९-४५ वॉर पदक जैसे कई सम्मान इन्हे प्राप्त थे। १९८३ में भारत सरकार ने आपको पद्म भूषण से सम्मानित किया था। २१ नवम्बर २००५ को इनका देहान्त हो गया। अन्य मोर्चो पर भी अहीरों ने अपनी बहादुरी का परिचय दिया और कई अन्य सम्मान प्राप्त किए। राव जगमाल सिंह ण्क्ैए राव उमराव सिंह ने अफगानों के विरूद्ध शौर्य का प्रदर्शन कर ण्क्ै से सम्मानित हुए। सुबेदार राव मातादीन सिंह को उनकी बहादुरी के लिये जॉर्ज क्रॉस और ण्क्ै से दो बार सम्मानित किया गया था। सुबेदार मेजर सुरत सिंह मिलिट्री क्रॉस, राव छैलुराम, ण्क्ै , राव देवाराम, ण्क्ै ए राव रघुनाथ सिंह, मिलिट्री क्रॉस, राव धनसिंह, मिलिट्री

क्रॉस, राव भीमसिंह, जॉर्ज क्रॉस आदि अहीरो ने अपनी वीरता और बहादुरी से सभी को प्रभावित किया। ६

भारत की आजादी के लिए नेताजी सुभाष चन्द बोस के नेतृत्व में गठित आजाद हिन्द फौज में सैकडों वीर अहीर थे। इनमें राव मोलड सिंह को आजाद हिन्द फौज के सर्वोच्च बहादुरी पदक 'शहीद-ए-भारत' से सम्मानित किया गया था। राव हरिसिंह को 'शेर-ए-हिन्द' तथा कर्नल रामस्वरूप को 'सरदार-ए-जंग' पदक से नवाजा गया था। कर्नल रामस्वरूप आजाद हिन्द फौज की खुफिया ईकाई के प्रमुख थे। मेजर चन्द्रभान को 'सरदार-ए-जंग' एवं कप्तान राव गणेशी को 'तमगा-ए-बहादुरी' से सम्मानित किया गया था। इसी वर्ष २६ जनवरी की परेड में आजाद हिन्द फौज के चार जीवित सैनिकों ने भाग लिया था। इनमें एक अहीरवाल क्षेत्र के श्री परमानन्द यादव थे। अहीरवाल क्षेत्र के सैकडों अहीरों ने आजादी की लडाई में आजाद हिन्द फौज में अपने वतन के लिए खून बहाया है। ७

आजादी के बाद कश्मीर पर कबाइली आक्रमण के दौरान अहीरों ने अलग-अलग मोर्चो पर अपनी मातृभूमि के लिये खून बहाया। कश्मीर में अलग-अलग मोर्चों पर अहीरों ने अपनी बहादुरी और शौर्य का परिचय देते हुए बहादुरी के खिताब जीते। राव अमीलाल, मेजर भगवान सिंह, अगनाराम, राव धंसीराम, राव हीरालाल, सुबेदार होशियार सिंह, कप्तान राव ईश्वर सिह, राव सरदार सिंह सहीत इन सभी वीरों को 'वीर चक्र' से नवाजा गया था। बडगाम के मोर्चे पर अहीरों ने ही मेजर सोमनाथ शर्मा के साथ अपना बलिदान दिया और देश का पहला 'परमवीर चक्र' इन्हे प्राप्त हुआ। इनके साथ कुमाऊ रेजिमेंट के वीर अहीर थे। जिनके दम पर ये जीत हासिल हुई। पाइंट ८६६७ पहाडी पर कब्जे के लिए मशक्कत हो रही थी तभी यह लक्ष्य वीर अहीरों को मिला और उन्होने वादा किया अगर इस पर कब्जा किया तो इस पहाडी का नाम 'अहीर पहाडी' कर देगें। आज पाइंट ८६६७ 'अहीर पहाडी' कहलाता है। झांगडा पर कब्जे का लक्ष्य कप्तान ईश्वर सिंह को मिला था जिसे इन्होने बडी ही बहादुरी से इसे प्राप्त किया इसलिए इन्हे 'झांगडा का शेर' कहते है।

१९६२ में चीन के आक्रमण के समय तो अहीरों ने अपनी वीरता और बहादुरी के बहुत ऊंचे मानक तय कर दिये। १३ कुमाऊ रेजिमेंट की तैनाती चुशूल घाटी की रेजांगला पोस्ट पर थी। इस कंपनी में १२० जवान थे। कमाण्डर मेजर शैतान सिंह भाटी, नर्सिंग असिस्टेंट धर्मपाल दहिया व सफाई कर्मचारीयों को छोडकर बाकि सभी जवान वीर अहीर थे। सैन्य इतिहास में इसे दुनियां की महानतम लडाइयों में शामिल किया गया है। रेजांगला में आखिरी गोली आखिरी सैनिक तक लडे गये युद्ध में ११४ वीर जवान शहीद हो गये और चीन के लगभग ८००-९०० सैनिको को मौत के घाट उतार दिया था। आमने-सामने के युद्ध में वीर अहीरों ने गोलीयां समाप्त होने पर चीनीयों को उठा-उठा कर पत्थर पर मारा था। भारत सरकार ने कम्पनी कमांडर मेजर शैतान सिंह को परमवीर चक्र वहीं इस बटालियन के आठ जवानो को वीर चक्र, चार को सेना मैडल व एक को मैंशन इन डिस्पैच का सम्मान प्रदान किया। इस युद्ध में सगे भाई सिंघराम व रामकुमार ग्राम धवाना जीजा-साला हरफूल यादव ग्राम चांदपुर और ब्रजलाल ग्राम नाहरखेडा, चाचा-भतीजा ब्रजलाल व हरिराम ग्राम नाहरखेडा तथा एक ही गांव के कई वीर अहीर शहीद हो गए थे।

१९६५ में पाकिस्तान के विरूद्ध भी अहीरों ने जम कर लोहा लिया था। हाजीपीर मोर्चा नहीं टूट रहा था , तो मेजर रंजित दयाल ने अहीरों को ललकारा

और अहीरों ने मोर्चा फतह कर दिया। सुबेदार नन्द किशोर, उमराव सिंह को वीर चक्र से सम्मानित किया गया तथा अन्य कई बहादुरी पुरस्कार अहीरों ने जीते। १९६७ में नाथुला युद्ध में भारत ने १९६२ की जंग का बदला लिया और चीन को कडा सबक सिखाया। इस युद्ध में वीर अहीर ब्रिगेडियर रायसिंह यादव (तत्कालीन लैफ्टिनेंट कर्नल) ने अपने अदम्य साहस और बहादुरी से चीन को शांति समझोते के लिए मजबूर किया। इनकी बहादुरी और वीरता के लिए इन्हे महावीर चक्र से सम्मानित किया गया। इसी युद्ध पर २०१८ में पलटन फिल्म रिलीज हुई थी। रायसिंह यादव को 'टाइगर ऑफ नाथुला' कहा जाता है।

१९७१ के युद्ध में अहीरों ने बहादुरी के कई पदक जीते। दो महावीर चक्र तथा कई वीर चक्र प्राप्त किए। कोमोडोर बबरूभान यादव व राव चमन सिंह को महावीर चक्र और मेजर जय भगवान, राव नन्दराम, सुबेदार नानजीराम, नायक उम्मेदसिंह को वीर चक्र से सम्मानित किया गया। लौंगेवाला युद्ध के बाद भागती पाक सेना पर हमला करने और ठच -६३८ पर कब्जा करने की जिम्मेदारी १३ कुमाऊ रेजिमेन्ट के वीर अहीरों को मिली और वीर अहीरो ने ठच ६३८ पर कब्जा किया और पाकिस्तान के ५१ सैनिकों का सफाया किया। इस दौरान ४ वीर अहीर भी शहीद हुए। बबरूभान यादव पहले नौसैनिक थे जिन्हे महावीर चक्र से नवाजा गया था। इन्होने अपनी पनडुब्बी से ३ दिसम्बर १९७१ को कराची बंदरगाह को तबाह कर दिया था इन्हे 'किलर ऑफ कराची' कहा जाता है।

१९९९ के कारगिल युद्ध के दौरान अहीरों ने अपना बलिदान दिया और बहादुरी के पदक जीते। योगेन्द्र सिंह यादव को सबसे कम उम्र (मात्र १९ वर्ष) में परमवीर चक्र से नवाजा गया। तथा अन्य वीर अहीरों ने भी बहादुरी पदक जीते। इन युद्धों के अतिरिक्त शांतिकाल में भी बहादुरी के सर्वोच्य पदक अशोक चक्र से ४ वीर अहीर यौद्धा सम्मानित है। जिनमें ३ अहीरवाल और एक बिहार के है। सुबेदार सज्जन सिंह यादव, सुबेदार सुरेश चन्द यादव, अक्षर धाम मन्दिर की रक्षा में शहीद हुए। जगदीश यादव २००१ में संसद की सुरक्षा में शहीद हुए। कंमाडो ज्योति प्रकाश निराला जम्मू कश्मीर में शहीद हुए।

अहीरवाल क्षेत्र के अहीर अपनी बहादुरी और वीरता के लिये विख्यात है। प्राचीन काल से ही अपनी मातृभूमि के लिये लडे गये प्रत्येक युद्ध में अहीरों ने अपना बलिदान दिया है । अहीरवाल से लगता हुआ मेवात इलाका है जहां मेवो द्वारा अहीरों के लिए एक कहावत कही जाती है-

यूं आ कर कही अजीम न, कि सुनो भई बस्ती गांम।
बचिए मर्द अहीर से,या फिर लडकर करलो नाम।।

अहीरवाल क्षेत्र ने सैन्य सेवा की एक प्राचीन परम्परा है। मेरे परिवार में व मेरे रिश्तेदारों में (लेखक के) पिछले १०० वर्षो से सैन्य सेवा की परम्परा चली आ रही है। मेरे दादा जी ताऊजी, पिताजी, भाई व नानाजी,मामाजी, मौसाजी, बहनोई ने एक सैनिक के रूप में देश की सेवा की है। १९७१ के युद्ध के दौरान मेरे ताऊजी और १९९९ के कारगिल युद्ध के दौरान मेरे पिताजी मोर्चे पर तैनात थे। अहीरवाल क्षेत्र के अहीरो ने बहादुरी के प्रत्येक पदक जीते है। ब्रिटिश भारत के समय विक्टोरिया क्रॉस, जॉर्ज क्रांस, प्वैड आदि व आजाद हिन्द फौज के सर्वोच्च बहादुरी पुरस्कार शहीद ए भारत तथा आजाद भारत के परमवीर चक्र, महावीर चक्र, अशोक चक्र, वीर चक्र, शौर्य चक्र, कीर्ति चक्र जैसे सभी पुरस्कार वीर अहीरों ने जीते है।

आज भी देश के लिये शहीद होने वाले वीर सैनिकों में अहीर यौद्धा अवश्य मिल जायेगें। अहीरवाल क्षेत्र को 'सैनिको की खान' कहा जाता है। अहीरों को

*'शूरवीरों मे अति शूरवीर वीर अहीर' 'वीर अहीर अजीत है अभीत है।' जैसे खिताब हासिल है। अहीरवाल क्षेत्र, मेवात और दिल्ली में ये कहावत मशहूर है-*

*दिल्ली पाछे मर्द भतेरे, बसे देश अहीरवाल में।*
*सिंहनी के जाये शेर अहीर, बसे देश अहीरवाल में।।*

**सन्दर्भ :–**

१. डॉ. के.सी. यादव, अहीरवाल : इतिहास एवं संस्कृति, हरियाणा हिस्टॉरिकल सोसायटी, गुडगांव, २००० पृ.२
२. डा. राजबली पाण्डे, यदुवंश का इतिहास, यदुकुल दीपिका, नई दिल्ली, १९९९, पृ.९
३. डॉ. रवीन्द्र सिंह यादव, १८५७ की क्रान्ति के पुरोधा : राव राजा तुलाराम, पुनीत प्रकाशन,जयपुर, २०१३, पृ.४९
४. वहीं, पृ. ५६–५७
५. राव अजीत सिंह, अहीर रेजिमेन्ट आन्दोलन के जनक से प्राप्त जानकारी
६. वहीं
७. वहीं